म	प	रें	रें	—	सां	रें	सां	निसां	नि	म	प
भो	—	ज	न	—	की	र	ही	——	क	छु	—
सां	निसां	नि	प	म	प	नि	प	म	रे	म	प
चा	——	खो	ए	—	क	बे	—	—	—	रि	—

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	म	म	प	—	प	नि	प	प	म	प	प
अ	ति	प्र	वी	—	न	जा	—	न	रा	—	य
म	प	नि	नि	सां	सां	रें	सां	सां	नि	—	प
क	न	क	बे	—	ला	क	र	मैं	लि	—	ये
नि	प	प	म	प	प	नि	पम	म	रे	—	सा
बा	ट	त	मे	—	वा	म	न—	ग्र	स	—	न्न
नि़	सा	रे	रे	म	प	नि	प	म	रे	सा	सा
हे	—	र	त	—	—	च	हु	—	फे	—	रि

स क ल पा — क प र मा नं — द आ — रो — ग त
परमानं — द परमानं — द टो — क क र त सु ब ल टे —
रि टे — — रि — —

"आभोग अन्तारानुसार"

राग सारंग–ताल चौताल

बेठे हरि राधे संग कुंजभवन अपने रंग, कर मुरली अधर धरें सारंग मुख गाइ ।

मोहन अतिही सुजान परम चतुर गुन निधान, जानि बूझि अेक तान चूकिकें बजाइ ।।२।।

प्यारी जब गह्यो बीन सकल कला गुन प्रवीन, अति नवीनरुप सहित वही तान सुनाइ ।

'वल्लभ' गिरिधरनलाल रीझ दइ अंकमाल, कहत भलें भलेंजु लाल सुन्दर सुखदाइ ।।२।।

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
नि	–	प	म	रे	म	रेम	पनि	पम	रे	–	सा
बे	–	ठे	–	ह	रि	रा–	––	धे–	सं	–	ग
ऩि	सा	रे	मरे	म	प	नि	पम	पम	रे	–	सा
कुं	–	ज	भु–	व	न	अ	प–	ने–	रं	–	ग
ऩि	सा	रे	म	प	–	नि	प	म	प	नि	सां
क	र	मु	र	ली	–	अ	ध	र	ध	रैं	–
निसां	रैं	सां	नि	प	प	नि	प	म	रे	म	प
सा–	–	रं	ग	मु	ख	गा	–	–	इ	––	–

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
म	—	प	प	नि	प	नि	सां	नि	सां	—	सां
मो	—	ह	न	अ	ति	ही	—	सु	जा	—	न
नि	सां	रें	मं	रें	सां	नि	सां	सां	नि	—	प
प	र	म	च	तु	र	गु	न	नि	धा	—	न
म	प	रें	रें	सां	सां	रें	नि	सां	नि	प	प
जा	—	न	बु	—	झ	अे	—	क	ता	—	न
निसां	रें	सां	नि	प	प	नि	प	म	रे	म	प
चु—	—	क	के	—	ब	जा	—	—	इ	—	—

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	—	प	—	प	प	नि	प	म	प	—	प
प्या	—	री	—	ज	ब	ग	ह्यो	—	बी	—	न
म	प	नि	नि	सां	निसां	रें	रें	सा	नि	प	प
स	क	ल	क	ला	——	गु	न	प्र	वी	—	न
नि	नि	प	म	प	म	रे	—	रे	सा	नि	सा
अ	ति	न	वी	—	न	रु	—	प	स	हि	त

रे	रे	म	प	–	प	नि	प	म	रे	नि़	सा
व	ही	–	ता	–	न	सु	ना	–	इ	–	–

व–ल्लभगिरिधरन ला – ल, री – क्ष द इ — अं – क
मा — ल, कहत भ लें — भ लें जु ला — ल, सुं — दर
सु ख दा — — इ — —

"आभोग अन्तरानुसार"

राग सारंग–ताल धमार

तें मोहनको मन हर्यो तो बिन रह्यो न जायरी प्यारी ।।ध्रु।। कुंज महल बेठे पिया नव, पलुव तलप संवारि, री प्यारी ॥ वीच जुही बीच सेवती अरु, बिच बिच नवल निवारि, री प्यारी, ॥१॥ ××××× गोविंद प्रभु पिय सों मिली, रहसि कंठ लपटाय, री प्यारी ।।७।!

स्थायी

×					२		०			३			
रें	–	–	सां	नि	सां	–	नि	ध	प	म	–	प	–
तें	–	–	मो	–	–	–	ह	न	–	को	–	–	–
नि	ध	–	प	म	प	म	रे	–	–	सा	–	–	–
म	न	–	–	–	ह	–	र्यों	–	–	–	–	–	–
म	–	–	म	–	म	रे	रे	रे	–	म	–	प	–
तो	–	–	बि	–	न	–	र	ह्यो	–	–	–	न	–
नि	ध	ध	ध	नि	सां	नि	ध	प	–	म	प	नि	सां
जा	–	–	–	–	–	य	री	–	–	प्या	–	री	–

नि	–	–	प	म	प	म	रे	रे	–	म	–	प	–
कुं	–	–	ज	–	म	–	ह	ल	–	बे	–	–	–
नि	–	–	प	म	प	म	रे	–	–	नि़	–	सा	–
ठे	–	–	–	–	पि	–	या	–	–	न	–	व	–
म	–	–	रे	–	रे	–	म	म	–	प	–	प	–
प	–	–	लल	–	व	–	त	ल	–	प	–	सं	–
ध	–	–	ध	नि	ध	नि	ध	प	–	म	प	नि	सां
वा	–	–	–	–	रि	–	री	–	–	प्या	–	रा	–

अंतरा

×					२		०			३			
रें	–	–	रें	–	रें	मं	मं	–	–	रें	–	रें	–
बी	–	–	च	–	जु	–	ही	–	–	बि	–	च	–
रें	–	–	रें	गं	रें	सां	रें	नि	–	सां	–	सां	–
–	–	–	से	–	व	–	ती	–	–	औ	–	र	–
रें	रें	मं	रें	–	रें	–	सां	सां	–	सां	–	सां	रें
बि	च	–	बि	–	च	–	न	व	–	ल	–	नि	–

नि	–	–	प	–	म	प	नि	–	–	सां	–	नि	सां
वा	–	–	–	–	री	–	प्या	–	–	री	–	–	–

संचारी—कुजमहल तुव पथ अनुसार और आभोग अन्तरानुसार

राग सारंग—ताल धमार

डोल झूलत है पिय प्यारी ।। नंदनंदन वृषभान दुलारी ।।१।। कमल नैंन पर केसर डारी ।। अबीर गुलाल करी अंधियारी ।।२।। झूलत श्याम झुलावति नारी ।। हँसी हँसी देत परस्पर गारी ।।३।। गावत गीत दे दे कर तारी ।। बाजत बेनु परम रुचिकारी ।।४।। भीजि लगी तन तनसुख सारी ।। खेल मच्यो वृन्दावन भारी ।।५।। रसिक सिरोमनि कुंजबिहारी ।। "कृष्णदास" प्रभु गिरिवरधारी ।।६।।

स्थायी

×					२		०			३			
नि	–	–	नि	–	नि	–	सां	–	–	सां	–	सां	रें
झू	–	–	ल	–	त	–	है	–	–	पि	–	य	–
नि	–	–	म	–	प	–	नि	–	–	सां	–	सां	–
प्या	–	–	री	–	–	–	डो	–	–	–	–	ल	–
रें	–	–	सां	–	सां	–	नि	–	–	प	–	म	प
झू	–	–	ल	–	त	–	है	–	–	पि	–	य	–
नि	–	–	प	म	प	म	रे	–	–	नि़	–	सा	–
प्या	–	–	–	–	–	–	री	–	–	–	–	–	–

नि — —: नि —	नि —	सां सां —	नि — सां —
नं — — द —	नं —	द न —	वृ — ष —
रें मं — रें —	सां —	रे नि —	सां — — —
मा — — न —	दु —	ला — —	री — — —

अंतरा

×	२	०	३
मं मं — मं —	रें —	रें रें —	सां नि सां —
क म — ल —	नें —	— न —	प — र —
रें — — रें —	सां —	रें नि —	सां — — —
के — — स —	र —	डा — —	री — — —
नि नि — सां —	सां रें	नि — —	म — प —
अ बा — र —	गु —	ला — —	ल — क —
रें — — सां —	सां —	रें नि —	सां — — —
री — — अं —	धि —	या — —	री — — —

संचारी

×	२	०	३
नि — — नि —	नि —	सां — —	सां — नि सां
झू — — ल —	त —	स्या — —	म — झु —

रें मं – रें –	सां –	रें नि –	सां – – –
ला – – व –	त –	ना – –	री – – –
नि नि – नि –	नि –	सां – –	सां – सां रें
हँ सि – हँ –	सि –	दे – –	त – प –
नि – – म –	प –	नि – –	सां – – –
र – – स्प –	र –	गा – –	री – – –

गा– –व–त–गी– –त–दे–, दे –क–र–ता– –री– ––,
बा– –ज–त–बें– –नु–प–, र म–रु–चि–का– –री– – –,

"आभोग अंतरानुसार"

राग सारंग–ताल धमार

नैननिमें जिन डारो गुलाल तिहारे पाँय परत नंदलाल ॥
होत है अंतर पिय दरसनमें, बिनु दरसन बेहाल ॥१॥
कनकबेली वृषभान नंदिनी, प्रीतम स्यामतमाल ॥
रितु बसंत वृन्दाबन फूल्यों, नाचत गोपी ग्वाल ॥२॥
व्रजके लोग सबे जुरि आये, करत कुलाहल ख्याल ॥
"रामदास" प्रभु गिरिधर नागर, पीक रंग सोहै गाल ॥३॥

स्थायी

×	२	०	३
नि – – सां –	सां –	सां – –	नि – प –
नै – – न –	न –	में – –	जि – न –
नि – – म –	प –	नि – –	सां – सां –
डा – – रो –	गु –	ला – –	ल – ति –

रैं	–	–	रैं	–	–	–	सां	–	–	सां	–	सां	–
हा	–	–	रे	–	–	–	पाँ	–	–	य	–	प	–
नि̲	प	–	म	प	नि̲	–	प	म	–	रे	–	नि̣	सा
र	त	–	नं	–	द	–	ला	–	–	–	–	ल	–

अन्तरा

×					२		०			३			
रैं	–	–	रें	–	रें	–	रें	–	–	रें	–	रें	–
हो	–	–	त	–	है	–	अं	–	–	त	–	र	–
मं	रें	–	सां	–	सां	–	रें	नि	–	सां	–	–	–
पि	य	–	द	–	र	–	स	न	–	में	–	–	–
नि	सां	–	रें	–	मं	–	रें	रें	–	सां	नि	सां	–
बि	न	–	द	–	र	–	स	न	–	बे	–	–	–
नि̲	–	–	म	–	प	–	नि	–	–	सां	–	–	–
हा	–	–	ल	–	ति	–	हा	–	–	रें	–	–	–
रें	–	–	रें	–	रें	–	सां	सां	–	नि̲	–	प	–
पा	–	–	य	–	प	–	र	त	–	नं	–	द	–
नि̲	–	–	प	म	प	म	रे	–	–	सा	–	–	–
ला	–	–	–	–	–	–	ल	–	–	–	–	–	–

संचारी

×					२		०			३			
नि	नि	-	सां	-	सां	-	नि	प	-	म	-	प	-
क	न	-	क	-	बे	-	-	लि	-	वृ	-	ष	-
नि	-	-	प	म	प	म	रे	रे	-	नि़	-	सा	-
भा	-	-	न	-	नं	-	-	दि	-	नी	-	-	-
म	-	-	म	-	म	-	रे	-	-	म	-	प	-
प्री	-	-	त	-	म	-	स्या	-	-	म	-	त	-
ध	-	-	नि	ध	नि	ध	प	-	-	-	-	-	-
मा	-	-	-	-	-	-	ल	-	-	-	-	-	-

रि तु–ब–सं– –त–वृ– – –, दा – –ब–, न–फू– –ल्यो– – –ना– –
च–त–गो – –पी– – –, ग्वा– –ल–ति–हा– –रें– – –,पा– –य–प–
रत–नं–द–ला– – – – – – –ल– – – – – – –,

राग सारंग–ताल धमार

घर घर ग्वाल देत हैं हेरी ।। बाजत ताल मृदंग बाँसुरी, ढोल दमामा भेरी ।।२।।
झूंटत लूंटत खात मिठाई, कहि न सकत कोउ फेरी ।।
उनमद ग्वाल करत कोलाहल, ब्रजवनिता सब घेरी ।।२।।
ध्वजा पताका तोरन माला, सबे सिंगारित सेरी ।।
जै जै कृष्ण कहत "परमानंद" प्रगटयो कंसको बेरी ।।३।।

स्थायी

×					२		०			३			
नि	-	-	नि	-	सां	-	-	सां	-	सां	-	रें	-
ग्वा	-	-	ल	-	दे	-	-	त	-	है	-	-	-

सां	नि	सां	नि̱	प	म	प	नि	नि	-	सां	-	सां	-
हे	-	-	री	-	-	-	घ	र	-	घ	-	र	-
रैं	-	-	रैं	-	सां	-	-	सां	-	नि̱	-	प	-
ग्वा	-	-	ल	-	दे	-	-	त	-	है	-	-	-
नि̱	-	-	प	म	प	म	रे	-	-	नि̣	-	सा	-
हे	-	-	-	-	-	-	री	-	-	-	-	-	-

अंतरा

×					२		०			३			
म	प	-	नि	-	नि	-	सां	-	-	सां	-	नि	सां
बा	-	-	ज	-	त	-	ता	-	-	ल	-	मृ	-
रैं	मं	-	रैं	-	सां	-	रें	नि	-	सां	-	-	-
दं	-	-	ग	-	बां	-	-	सु	-	री	-	-	-
रैं	मं	-	मं	-	मं	-	रें	-	-	सां	-	रें	-
ढो	-	-	ल	-	द	-	मा	-	-	मा	-	-	-
सां	नि	सां	नि̱	-	म	प	नि	नि	-	सां	-	सां	-
मे	-	-	री	-	-	-	घ	र	-	घ	-	र	-

संचारी

×					२		०			३			
सां	–	–	सां	–	सां	रें	सां	नि	सां	नि॒	–	प	–
झू	–	–	ट	–	त	–	लू	–	–	ट	–	त	–
नि॒	–	–	म	–	प	–	नि	–	–	सां	–	–	–
खा	–	–	त	–	सि	–	ठा	–	–	इ	–	–	–
रें	रें	–	रें	–	सां	–	सां	सां	–	नि॒	–	प	–
क	हि	–	न	–	स	–	क	त	–	को	–	उ	–
नि॒	–	–	प	म	प	म	रे	–	–	सा	नि़	सा	–
फे	–	–	–	–	–	–	री	–	–	–	–	–	–

उ – – न्म – द – ग्वा – – ल – क – र त – को – – – ला – – ह–
ल – , व्रज – व – नि – ता – – स – ब –, घे – – री – – –
घर – घ – र –,

"आभोग अन्तरानुसार"

राग सोरठ मल्हार–ताल आडा चौताल

झूलत सूरंग हिंडोरे राधामोहन ॥
बरन बरन चूनरी पहिरें व्रजबधू चहूंओरे ॥१॥

राग मल्हार अलापत सप्तसुर तीनग्राम जोरे ॥
मदनमोहनकी या छवि उपर 'गोविंद' बल तृनतोरे ॥२॥

स्थायी

×			२		३		×			२		३	
नि	सां	रें	नि	धप	मग	रेसा	मरे	प	–	मप	धसां	–	–
झू	ल	त	झू	रं–	ग–	हिं–	डो–	रें	–	रा–	धा–	–	–
निध	प	म	–	गरे	नि़	सा	रेग	मप	प	मग	मग	रे	ग
मो–	ह	न	–	झू–	ल	त	झू–	––	रं	––	ग–	–	हिं
प	म	–	गरे	ग	नि़	सा							
डो	–	–	––	–	रे	–							

अंतरा

×			२		३		×			२		३	
मंमं	मं	मं	रें	रें	–	–	रेगं	रें	सां	रें	नि	सां	–
बर	न	ब	र	न	–	–	चू–	न	री	प	हि	रें	–
नि	सां	रें	नि	धप	मग	रेसा	मरे	प	–	मप	धसां	–	–
ब्र	ज	ब	धू	––	च–	हूं–	ओ–	रे	–	रा–	धा–	–	–

संचारी

×			२		३		×			२		३	
म	रे	म	प	–	प	प	म	प	प	धनि	सां	धप	म
रा	ग	म	ल्हा	–	र	अ	ला	प	त	स–	प्त	सु–	र

मग रे सा	रेग मप	मग रेग	प म –	रे –	सा –
ती- – न	ग्रा- --	-- म-	जो – –	रे –	– –

आभोग

×	२	३	×	२	३
मप नि नि	सां सां	सां सां	गंमं रें सां	रें नि	सां सां
मद न मो	ह न	जु की	या– छ बि	उ –	प र
नि सां रें	निध प	मग रेसा	मरे प –	मप धसां	– –
गो वि द	ब– ल	तृ– न-	तो– रे –	रा– धा-	– –

राग गौड मल्हार—ताल चौताल

घूमि घूमि घटा आइ झूमि झूमि लता रही
भूमि हरियारी लागे सुभग सुहाय माइ ॥
तहा बेठे पिय प्यारी भूखन छबि न्यारी न्यारी
मुख की उजियारी न्यारी मानो चांदनीसी छाइ माइ ॥१॥
तनन तनन तान लेत प्यारी कर ताल देत
गावत मल्हार राग अति ही मन भाइ ॥
'श्रीविठ्ठलगिरिधारीलाल' लखि मोहि व्रजबाल
रीझि रीझि रहे दोऊ कंठ लपटाइ माइ ॥

स्थायी

×	०	२	०	३	४
नि –	ध ध	नि पध	नि सां	– नि	सां सां
घू –	मि घू	– मि-	घ टा	– आ	– इ

नि	प	म	प	—	प	धनि	सां	धप	मग	प	म
झू	—	मि	झू	—	मि	ल—	ता	——	र-	ही	—
म	रे	रे	ग	म	प	मग	म	रे	रे	सा	सा
भू	—	मि	ह	—	रि	या-	—	री	ला	—	गे
म	रे	प	प	म	प	धनि	सां	धप	म	ग	म
सु	भ	—	ग	—	सु	हा-	—	इ—	मा	—	इ

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
नि	नि	–	सां	–	नि	सां	सां	–	नि	सां	सां
त	हा	–	बै	–	ठे	पि	य	–	प्या	–	री
म	म	प	प	नि	प	निसां	रें	रें	ध	नि	प
भू	ख	न	छ	–	बि	न्या-	–	री	न्या	–	री
प	रें	रें	सां	रें	गं	पं	गं	मं	रें	सां	सां
सु	ख	की	–	उ	जि	या	–	री	मा	–	नो
सां	ध	नि	प	म	प	धनि	सां	धप	म	ग	म
चां	—	द	नी	–	सी	छा-	–	इ—	मा	–	इ

सांचारी

×		०		२		०		३		४	
म	म	म	म	रे	रे	रे	प	प	प	—	प
त	न	न	त	न	न	ता	—	न	ले	—	त
म	रे	रे	प	प	प	धनि	सां	ध	प	म	ग
ध्या	—	री	—	क	र	ता—	—	ल	दे	—	त
म	गम	रे	ग	म	प	म	प	म	रे	—	सा
गा	——	व	त	—	म	ल्हा	—	र	रा	—	ग
म	रे	प	—	म	प	ध	धनि	प	म	रे	सा
अ	ति	ही	—	म	न	भा	——	—	इ	—	—

श्री वि ठ्ठ ल गि रि धा — री ला — ल, ल खि — मो — हि
ब्र ज — बा — ल, री — झि री — झि रहे — दो — ऊ, कँ
— ठ ल — प टा — इ मा — इ

"आभोग अन्तरानुसार"

राग धूलिया मलहार – ताल आडा चौताल (मात्रा १४)

जै श्रीजगन्नाथ हरि देवा ॥
रथ बैठे प्रभु अधिक बिराजत, करे जगत सब सेवा ॥१॥
सनक सनंदन और ब्रह्मादिक, इन्द्रादिक जुरि आये ॥
अपनी अपनी भेट सबें ले, गगन बिमाननि छाये ॥२॥

रतन जटित रथ नीको लागत, चंचल अस्व लगाये ।।
नरनारी आनंद भये अति, प्रमुदित मंगल गाये ।।३।।
गारी देत, दिवावत आपुन, यह विधि रथहि चलाये ।।
'रामराय' गोवर्धनवासी, नगर उडीसा आये ।।४।।

स्थायी

×		२		०		३		०		४		०	
नि	–	सां	–	सां	–	रें	नि	नि	ध	प	म	ग	रे
ज	–	गं	–	ना	–	–	–	थ	–	ह	–	रि	–
म	रे	प	–	–	–	ध	नि	सां	–	ध	प	म	–
दे	–	वा	–	–	–	ज–	–	य	–	श्री	–	–	–
रे	–	रे	ग	रे	सा	रे	–	प	–	प	म	ग	रे
ज	–	गं	–	ना	–	–	–	थ	–	ह	–	रि	–
प	–	म	–	–	–	म	रे	ग	–	नि	–	सा	–
दे	–	वा	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–

अंतरा

×		२		०		३		०		४		०	
मं	मं	रें	–	–	–	रें	–	गं	–	रें	–	सां	–
र	थ	बै	–	–	–	ठे	–	–	–	प्र	–	भु	–
रें	गं	रें	–	सां	–	रें	–	नि	–	सां	–	सां	–
अ	धि	क	–	बि	–	रा	–	–	–	ज	–	त	–

प	नि	सां - सां रें	नि ध प म	ग रे ग सा
क	र	- - ज -	ग - त -	स - ब -
म	रे	प - - -	ध नि सां -	ध प म -
से	-	वा - - -	ज़ - य -	श्री - - -

संचारी

×		२ ०	३ ०	४ ०
म	मरे	म - म -	प - - -	प - प -
स	न-	क - स -	नं - - -	द - न -
म	-	प - प -	ध नि सां -	ध प म -
औ	-	र - ब्र -	ह्मा- - - -	दि - क -
रे	ग	रे - सा -	रे ग म प	म ग रे ग
ई	-	न्द्रा - - -	दि - क -	जु - रि -
प	-	म - - -	रे - - -	नि़ - सा -
आ	-	- - - -	ये - - -	- - - -

"आभोग अन्तरासुसार"

राग नट मल्हार ताल चौताल

अरी माई नई नई धरती दुलहनि होय रही, मेघ मल्हार आये ब्याहन ॥
इन्द्र के नगारे बाजें बृंदन के सेहरा, बादर बराती आये बरन बरन ॥१॥
पपैया पिकपिक करें दादुर सुर भरें, कोकिला कुहु कुहु लागे करन ॥
'रसिक' प्रीतमकी बानिक निरखत, रतिपति काम लाग्यौ डरन ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
						नि	ध	नि	प	ग	म
						अ	री	–	मा	–	इ
नि	ध	–	नि	सां	–	रें	सांनि	सां	ध	नि	प
न	ई	–	न	ई	–	ध	र–	–	ती	–	–
म	म	रे	प	प	–	धनि	सां	सां	ध	नि	प
दु	ल	–	ह	नि	–	हो	–	य	र	ही	–
म	ग	रे	ग	म	ध	प	–	मग	म	रे	सा
मे	–	–	ध	–	म	ल्हा	–	र–	आ	–	ये
नि	ध	प	रे	ग	म						
ब्या	–	–	ह	न	–						

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
म	–	म	प	नि	नि	सां	–	सां	रें	नि	सां
इ	–	न्द्र	के	–	न	गा	–	रे	बा	–	जै
निम	प	प	नि	सां	–	रें	रें	नि	ध	नि	प
बुं–	–	द	न	को	–	से	–	ह	रा	–	–

प	–	रें	रें	गं	गं	मं	रें	सां	ध	नि	प
बा	–	द	र	–	ब	रा	–	ती	आ	–	ये
धनि	ध	प	रे	ग	म	–	धनि	प	रे	ग	म
ब–	र	न	ब	र	न	–	अ–	री	मा	–	इ

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	म	रे	प	प	प	ध	ध	नि	प	प	–
प	पै	या	–	पि	उ	पि	उ	–	क	रे	–
म	रे	प	प	म	प	धनि	सांरें	सां	ध	नि	ष
दा	–	दु	र	सु	र	ता–	––	ल	भ	रे	–
ग	म	रे	ग	म	प	ध	प	रे	ग	म	–
को	–	कि	ला	–	–	कु	हु	–	कु	हु	–
म	रे	प	प	ध	प	ग	म	रे	रे	सा	–
ला	–	–	गे	–	–	क	र	–	न	–	–

र — सिक — प्रीत — मकी — — बा — — नी — क निर
— ख — त रति — पति — का — भला -- ग्यो ड र —
न — —

"आभोग अन्तारानुसार"

राग गौरी (पूर्वी थाट) ताल त्रिताल

नातर लीला होची जूनी जापें श्रीवल्लभ प्रगट न होते, वसुधा रहती सूनी ।।१।। दिनप्रति नई नई छबि लागत, ज्यों कंचन नग चूनी ।। 'सगुनदास' यह घरको सेवक, जस गावत जाको मुनी ।।२।।

स्थायी

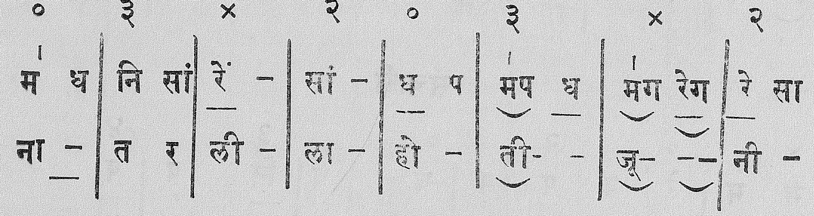
० ३ × २ ० ३ × २
म ध | नि सां | रें - | सां - | ध प | मप ध | मग रेग | रे सा
ना - | त र | ली - | ला - | हो - | ती- - | जू- -- | नी -

अंतरा

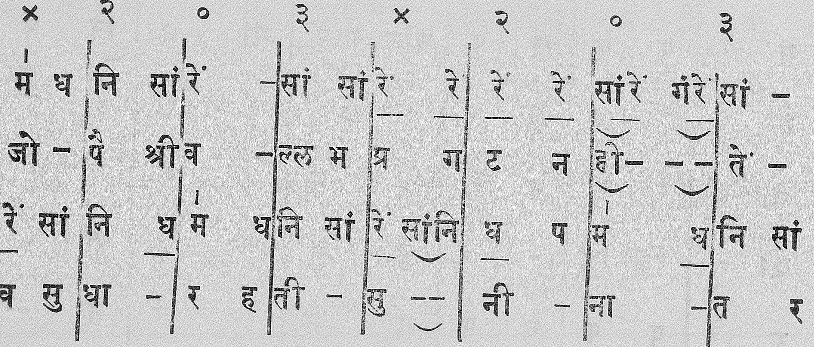
× २ ० ३ × २ ० ३
म ध | नि सां | रें - | सां सां | रें रें | रें रें | सांरें गंरें | सां -
जो - | पै श्री | व - | ल्ल भ | प्र ग | ट न | हो- -- | तें -
रें सां | नि ध | म ध | नि सां | रें सांनि | ध प | म ध | नि सां
व सु | धा - | र ह | ती - | सु -- | नी - | ना - | त र

संचारी

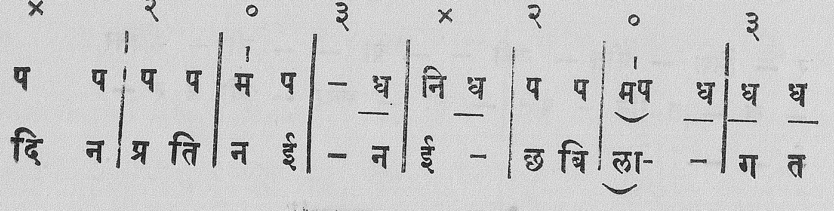
× २ ० ३ × २ ० ३
प प | प प | म प | - ध | नि ध | प प | मप ध | ध ध
दि न | प्र ति | न ई | - न | ई - | छ बि | ला- - | ग त

मंप	ध	मं	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	ध	-	मं	ग	रे	सा
ज्यो-	–	कं	–	च	न	न	ग	चू	-	-	-	नी	–	-	-

स गु न दा–स य ह, घ र को–से–व क, ज स गा–व त जा–को भु नी ना–त र,

"आभोग अन्तरानुसार"

राग जंगला—ताल कहरवा[१]

बाजे बधाइयां वे सैयां नंद दे दरबार। हुवा सुत सोहना वे मनदा मोहना सुकुमार। आई सुनि गोपियां वे हिलमिल गावहीं खुशियाल। जुरे सब लोग मंगनवे गुनिगन बोले दे दे ताल॥ गुनि दे ताला नाचे॥ वाहवा॥ आंगन पह पट मांचे॥ वाहवा॥ नंददा लाला जीवो॥ वाहवा॥ दूधा अमृत पीवो॥ वाहवा॥ खुशी दिल पावा झूमां॥ वाहवा॥ ललादी तुंनी चूमां॥ वाहवा॥ उसदा मंगल गावां॥ वाहवा॥ दान दुपट्टा पावां॥ वाहवा॥ वाहवा॥ वाहवा॥ पावां पटदान मोती वे॥ ×××× नागर दरसन पावोंव ॥ वाहवा॥॥ २॥

स्थायी

सारे निसा
बा- जेब

×				×				×				×			
रे–	–ग	रेग	मप	मग	रेग	सा-	रेग	–सा	रेसा	निध	निरे	सा-	--साप	प-	प
धा-	-इ	यां-	--	वे-	--	सै-	यां-	–नं	–द	दे-	दर	बा-	--रहु	वा-	सुत

---

[१] नागरीदासजी-कृत यह पद अधिकतर ढाढीलीलामें गाया जाता है।

-रे	-ग	रेग	मप	मग	रेग	सासा	रेग	-सा	रेसा	निध	निरे	सा-	--सासा	पनि	निनि
-सो	-ह	ना-	--	वे-	--	मन	दा-	-मो	-ह	ना-	सुकु	मा-	--रआ	ई-	सुनि

अंतरा

×				×			
-सां	-रे	निध	पध	मग	रेग	सासा	रेग
-गो	-पि	यां-	--	वे-	--	हिल	मिल
-सा	रेसा	निध	निरे	सां-	--सांसां	सां-	सांसां
-गा	-व	ही-	खुशि	या-	--लजु	रे-	सब
-रें	सांरें	सांनि	धप	मग	रेग	सासा	रेग
-लो	-ग	मं-	गन	वे-	--	गुनि	गन
-सा	रेसा	निध	निरें	सा-	--सासा	गमपध	मगरे
-बो	-ले	दे-	दे-	ता-	--लग	ता-ला-	ना-चे-
पपप-	प-पप	गमपध	मगरे-	×××			प-पप
वाहवा-	आं-गन	पहपट	मां-पे-				दा-नदु
नंददास	से	मंगल		गावा	वाहवा	तक	
चालु	स्वर	लिपि		पपप-	× ×	×	×
				वाहवा-			

गमपध	मगरे-	पपप-	----	सांसांसां-	निधधप	पम॑मग	रे--ग
प-टा-	पा-ग्रा-	वाहवा	----	वाहवा-	वाहवा-	वा-जेब	धा--ई

राग यमन–ताल धमार

[1]जियकी न जानत हो पिय, अपनी गरजके हो गाहक । मृदु मुसिकात ललचाय आय ढिंग, हरत परायो मन नाहक ॥१॥ कपटी कुटिल नेह नहिं समुझत, छलसों फिरत घर घरके रस चाहक । ये दइ निरदइ स्यामघन मेरे, 'परमानंद'उरदाहक ॥ २ ॥

स्थायी

३				×					२		०		
निध	पम॑	प	म॑ग	प	–	–	ग	रे	गम॑	प	रे	सा	–
जि-	य-	की	न-:	जा	–	–	न	त	हो–	–	पि	य	–
ग	ग	म॑	ध	सां	सां	–	नि	ध	म॑	ध	निध	पम॑	प
अ	प	नी	ग	र	ज	–	के	–	हो	–	गा–	ह–	क

अंतरा

×					२		०			३			
प	ग	–	प	म॑	ध	प	सां	–	–	सां	–	सां	सां
मृ	दु	–	मु	–	सि	–	का	–	–	त	–	ल	ल

---

[1] पाठांतर :– पियकी बात न जानत हो पिय ! आप स्वारथके गाहक ।

नि ध – नि –	रें –	गं रें –	नि रें सां –
चा – – य –	आ –	– य –	ढिं – ग –
म॑ ध – नि ध	नि ध	प – –	ग – म॑ ध
ह र – त –	प –	रा – –	यो – म न
नि ध प म॑ ग	प –	रे सा –	निध पम॑ प म॑ग
ना – – – – –	ह –	क – –	जि- य- का न-

संचारी

×	२	०	३
प प – म॑ ग	म॑ ध	नि ध –	प – प –
क प – टी –	– –	कु टि –	ल – ने –
म॑ ध – नि –	नि –	ध नि ध	प म॑ प –
– ह – न –	हिं –	स मु –	झ – त –
ग ग रे ग म॑	प प	रे रे –	सा सा ऩि रे
छ ल – सों –	– फि	र त –	घ र घ र
ग रे ग म॑ ग	प –	रे – –	सा रे सा –
के – – र –	स –	चा – –	ह – क –

ये– –द इ–नि र द इ– –स्या,–म–घ–न–मे– –रे– – –प र–
मा– – – नं––द– उ र दा– – – –ह–क– – जि य की न

"आभोग अन्तरानुसार"

राग यमन–ताल धमार (मध्य विलंबित लय)

लाग्यो रे लाग्यो मोसो होरी खेलन लाग्यो। रसिक खिलार कहावत हो तों,
अबिर डार कित भाग्यो ।।१।। ताहिसों खेलिये सांवरे हो, जाके रँग रस पाग्यो।
'कृष्णजीवन लछीराम'के प्रभु पिय, सदा ही रहत अनुराग्यो ।२।।

स्थायी

×					२		०			३			
										प	म॑प	ग	म॑
										ला	——	ग्यो	रे
नि	ध	—	प	—	गम॑	प	रे	—	सा	सां	—	सां	—
ला	—	—	ग्यो	—	——	—	मो	—	सो	हो	—	री	—
नि	ध	नि	प	—	ग	प	रे	—	सा				
खे	—	—	ल	—	न	—	ला	—	ग्यो				

अंतरा

×					२		०			३			
प	प	सां	सां	सां	—	सांनि	ध	नि	सां	रें	सांनि	ध	प
र	सि	क	खि	ला	—	र–	क	हा	व	त	हो-	—	तों
निरें	गं	गंपं	रें	सांनि	ध	निरें	सांनि	ध	प				
अबि	र	डा-	—	र–	कि	त–	भा–	ग्यो	रे				

संचारी

×					२		०			३			
प	प	ध	म॑	ध	नि	नि	ध	नि	ध	प	ग	प	–
ता	हि	सों	खे	–	लि	ये	सां	–	व	रे	–	हो	–
प	म॑ध	प	रे	रे	सा	सा	प	ग	म॑प	रे	–	सा	–
जा	––	के	रं	ग	र	स	पा	–	––	–	–	ग्यो	–

क्ृ ष्ण जी व न ल छी रा म के प्र भु पि थ
स दा ही र ह त अ नु रा–ग्यो

''आभोग अन्तरानुसार''

राग खमाज–ताल त्रिताल

स्याम जमुना बिच खेवत नाव ।
एक सखी आई घरतें, कहे मोहीको बेठाव ।।१।।
बेठो केसे घाट ओघट हे, रपटि परत हे पाव ।
हाथ पकरि बेठाय आपु ढिंग, 'रसिकन' रच्यो उपाव ।।२।।

स्थायी

२				०				३				×			
ध नि॒	पध	सांनि	सां	नि॒	धप	म	ग	ग	म	प	ध	नि	–	सां	सां
स्या-	म-	ज-	मु	ना	––	बि	च	खे	–	व	त	ना	–	–	व

अंतरा

०	३	×	२
ग म नि ध	नि – सां नि	सां – सां सां	सांरें निसां नि ध
ए – क स	खी – आ –	ई – घ र	तें– –– क हे
सां – गं मं	गं – सां रें	नि – सां –	धनि पध सांनि सां
मो – ही –	को – बे –	ठा – व –	स्या- म- ज- मु

संचारी

०	३	×	२
ग म नि ध	सां नि सां –	– नि सां सां	ध नि ध –
बे – ठो –	के – से –	– घा ट ओ	घ ट हे –
प ध म ग	ग म प ध	सां नि ध म	प ध म ग
र प टि प	र त हे –	पा – – –	– – व –

हा–थ प क रि बे–ठा–य आ–प ढिं ग, रसि कन र च्यो–उ पा–व स्या–म ज मु,

"आभोग अन्तरानुसार"

राग कान्हरो–ताल धमार

सुरभी कान जगाय खरिक, बल मोहन बेठे राजत हटरी ।
पिस्ता द्राख बदाम छुहारे, खुरमा खाजा गुंजा मठरी ॥१॥
घर घरतें नरनारि मुदित मन, गोपी ग्वाल जुरे बहु ठठरी ।
टेरि टेरि जब देत सबनको, ले ले नाम बुलाइ निकटरी ॥२॥
देति असीस सकल व्रजभामिनी, जसुमति देती हरखि बहु पटरी ।
'सूर' रसिक गिरिधर चिरजीयो, नन्द महरको नागर नटरी ॥३॥

स्थायी

×	२	०	३
सां नि – सां नि	सां –	सां – –	नि ध प ध
सु र – श्री –	– –	का – –	न – ज –
नि – – ध –	प –	म ग –	रे – सा –
गा – – य –	ख –	रि क –	ब – ल –
म – – म –	म –	प ध नि	ध – प –
मो – – ह –	न –	बे – –	ठे – – –
म ग – रे –	सा रे	ग म –	रे – सा –
रा – – ज –	त –	ह ट –	री – – –

अन्तरा

×	२	०	३
नि ध – नि –	सां –	सां – –	सां – सां –
पि – – स्ता –	– –	द्रा – –	ख – ब –
नि सां – रें –	रें –	गं मं –	रें – सां –
दा – – म –	छु –	हा – –	रे – – –
रें सां – नि –	ध –	प ध –	नि – सां –
खु र – मा –	– –	खा – –	जा – – –
सां नि – ध –	प –	म ग –	रे – सा –
गुं – – जा –	– –	म ठ –	री – – –

संचारी

×					२		०			३			
सां	नि	–	सां	–	सां	–	नि	ध	–	प	–	ध	–
घ	र	–	घ	–	र	–	तँ	–	–	न	–	र	–
नि	–	–	ध	–	प	–	म	ग	–	रे	–	सा	–
ना	–	–	रि	–	मु	–	दि	त	–	म	–	न	–
म	–	–	म	–	प	–	ध	नि	–	ध	–	प	–
गो	–	–	पी	–	–	–	ग्वा	–	–	ल	–	जु	–
म	ग	–	रे	–	सा	रे	ग	म	–	रे	–	सा	–
रे	–	–	ब	–	हु	–	ठ	ठ	–	री	–	–	–

टे– –रि–टे– –रि–ज–ब–,दे– –त–स–ब न–को – – –,ले–
– –ले – – –ना– –म–बु–ला– –इ–नि–क ट–री – – –,

''आभोग अन्तरानुसार''

राग कान्हरो–ताल धमार

हरि जनमन ही आनंद भयो ।
नवनिधि प्रगट भई नंदद्वारे, सब दुख दूरि गयो ॥१॥
वसुदेव देवकी मतो उपायो, पलना मांझि लयो ।
कमलाकंत दियो हुंकारो, जमुना पार दयो ॥२॥
नंद जसोदाके मन आनंद, गर्ग बुलाय लयो ।
'परमानंद'प्रभु असुरनिकंदन गोकुल प्रगट भयो ॥३॥

स्थायी

×	२	०	३
सां सां – सां –	सां रें	नि ध –	प – ध –
ज न – म –	न –	ही – –	आ – – –
नि – – ध –	प –	म ग –	रे – सा –
नं – – द –	भ –	यो – –	ह – रि –
म म – म –	प ध	नि – –	ध – प –
ज न – म –	न –	ही – –	आ – – –
म ग – रे –	सा रे	ग म –	रे – सा –
नं – – द –	भ –	यो – –	– – – –

अन्तरा

×	२	०	३
गं गं – गं –	गं –	रें रें –	सां – सां –
न व – नि –	धि –	प्र ग –	ट – भ –
नि सां – रें –	रें –	गं मं –	रें – सां –
ई – – नं –	द –	द्वा – –	रे – – –
सां सां – नि –	ध –	प ध –	नि – सां –
स ब – दु –	ख –	दू – –	रि – ग –
रें नि – ध –	प –	म प ध	ग – रे सा
यो – – – –	– –	– – –	ह – रि –

संचारी

×	२	०	३
सां सां – सां –	सां –	नि ध –	प – ध –
ब सु – दे –	व –	दे – –	व – की –
नि नि – ध –	प –	म ग –	रे – सा –
म तो – – –	उ –	पा – –	यो – – –
म म – प –	ध –	नि – –	ध – प –
प ल – ना –	– –	मां – –	झि – ल –
म ग – रे –	सा –	ग म –	रे – सा –
यो – – – –	– –	– – –	– – – –

“आभोग अन्तारानुसार”

राग नायकी–ताल चोताल

वारों मीन खंजन आलीके द्रगन पर भ्रमरगन ।
अतिहि सलोने लोनें अतिहि सुढार ढारें अति कजरारे भारे जिनही अंजन ॥१॥
स्वेत असित कटाक्षन तारे उपमाको मृगही कंजन ।
‘परमानंद’प्रभु रसवस कर लीने प्यारीजूके मनके रंजक ॥२॥

स्थायी

×	०	२	०	३	४
				नि़	सा रें
				वा	रों –
प –	– म	प निप	ग –	म रे	रेग सारें
मी –	– न	– ––	खं –	– ज	–– न–

नि	नि	-	धप	ध	म	प	प	निप	नि	सां	-
आ	ली	-	के-	-	द्र	ग	न	--	प	र	-
नि	प	म	प	धप	मप	ग	ग	म	रेग	सा	रे
भ्र	-	-	म	--	र-	ग	न	-	वा-	-	रों

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
म	प	-	नि	म	प	सां	-	सां	सां	-	सां
अ	ति	-	हि	-	स	लो	-	ने	लो	-	नें
नि	सां	-	रें	-	गंरें	गं	गंमं	रें	सां	नि	प
अ	ति	-	हि	-	सु-	ढा	--	र	ढा	-	रें
सां	सां	-	नि	ध	म	प	धप	निप	नि	सां	सां
अ	ति	-	क	-	ज्ञ	रा	--	रे-	मा	-	रे
रें	नि	ध	म	प	धप	ग	ग	म	रे	सा	रे
जि	न	-	ही	-	अं-	ज	न	-	वा	-	रों

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	-	-	म	प	प	नि	प	-	सां	-	सां
स्वे	-	-	त	-	अ	सि	-	-	त	-	क

सां –	– सां	नि प	नि ध	नि प	– –
टा –	– क्ष	– न	ता –	– रे	– –
म म	– प	नि प	म ग	– म	प प
उ प	– मा	– –	को –	– मृ	– ग
प –	– मप	नि प	ग –	म रे	– सा
ही –	– कं-	– –	ज –	– न	– –

'आभोग अन्तरानुसार'
राग अडाना–ताल तीव्रा

राधेजू झूलत रमकि रमकि ।
मनि कचनको सुरंग हिंडोरो ता मधि दामिनि दमकि दमकि ॥१॥
गावत गुन गिरिधरनलालके उठत दसन छबि चमकि चमकि ।
बाढ्यो हे रंग 'गदाधर'प्रभु संग गयो हे मदन तहां तमकि तमकि ॥२॥

स्थायी

२	३	×	२	३	×
नि प	निम प	सां – –	नि ध	नि प	म म प
रा –	धे- जू	झू – –	ल –	– त	र म –
नि प	म प	गम रे सा	नि प	निम प	
कि -	– र	म- कि -	रा –	धे- जू	

अंतरा

×			२		३		×			२		३	
म	प	निध	नि	सां	सां	–	निसां	रें	रें	सांनि	सां	निध	निप
म	नि	कं-	च	न	को	–	सुरं	ग	हिं	डो-	-	रो-	--
मप	नि	सां	गं	गंमं	रें	सां	नि	सां	–	रें	नि	सां	सां
ता-	म	धि	दा	--	मि	नि	द	म	–	कि	–	–	द
निध	नि	प	नि	प	निम	प							
म-	-	कि	रा	-	धे-	जू							

संचारी

×			२		३		×			२		३	
सां	सां	सां	नि	ध	नि	प	निध	नि	सां	–	निध	नि	प
गा	व	त	गु	न	गि	रि	धर	न	ला	–	ल-	के	–
मम	प	प	नि	सां	नि	प	म	म	प	ग	–	म	रेसा
उठ	त	द	स	न	छ	बि	च	म	–	कि	–	–	च-
रे	–	–	सा	–	–	–							
म	–	–	कि	–	–	–							

“आभोग अन्तरानुसार”

राग बिहाग–ताल त्रिताल

सखियन रुचि रुचि सेज बनाई ।
रंगमहलमें परि गये परदा, धरी अंगीठी सुखदाई ॥१॥

सीतसमे ग्रीष्म रितु कीनी, अति सुन्दर वरदाई ।
‘श्रीविट्ठल गिरिधारि’ कृपानिधि, पोढे ओढ रजाई ।।२।।

स्थायी

०	३	×	२
सा सा म ग	प – नि धनि	सां – नि निध	पम॑ प गम ग
रु चि रु चि	से – ज ब–	ना – ई ––	स– खि य– न
सा सा ग म	प पम॑ ग म	ग – – रे	सा – – –
रु चि रु चि	से –– ज ब	ना – – –	ई – – –

अंतरा

०	३	×	२
प – म गम	प प नि –	सां सां सां सां	निसां गंरें सां –
रं – ग म–	ह ल मैं –	प रि ग ये	प– र– दा –
प प म गम	प प नि नि	सां – निध नि	पम॑ प गम ग
ध री अं ––	गी ठी सु ख	दा – ई– –	स– खि य– न

संचारी

०	३	×	२
प – प म॑	प – ग म	प – नि नि	सांनि सां निध प
सी – त स	मे – ग्री –	ष्म – रि तु	की– – नी– –

ध	प	मं	प	ग	म	प	म	ग	–	–	रे	सा	–	–	–	–
अ	ति	सुं	–	द	र	व	र	रा	–	–	–	ई	–	–	–	–

आभोग

०				३				×				२			
प	–	सां	–	सां	सां	सां	सां	सां	–	गं	रें	सांनि	सां	नि	नि
श्री	–	वि	–	ठ	ल	गि	रि	धा	–	रि	कृ	पा–	–	नि	धि
प	–	म	गम	प	–	नि	नि	सां	–	निध	नि	पम	प	गम	ग
पो	–	ढे	––	ओ	–	ढ	र	जा	–	ई-	–	स–	खि	य–	न

राग बिहाग–ताल चर्चरी (झपताल अंग)

घरि घरिको रुसनो केसे बनि आवे । हे कोउ चेरी तेरे बाबाकी, नित्त उठि पैयां लागि तोहि मनावे ।।१।। अब तो कठिन भई मेरी आली, तो बिनु लाल ओर नहिं भावे । 'आसकरन'प्रभु मोहन नागर, मुरलीमें राधे राधे गावे ।।२।।

स्थायी

×		२			०		३		
प	प	म	ग	गम	प	निध	प	गम	ग
घ	रि	घ	रि	को-	रु	––	स	नो–	–
नि़	सा	गम	प	म	ग	–	रे	सा	–
के	–	से-	ब	नि	आ	–	–	वे	–

अंतरा

×		२			०		३		
प	–	नि	–	नि	सां	–	सां	–	–
हे	–	को	–	उ	चे	–	री	–	–
नि	सां	गं	गं	मं	गं	रें	सां	नि	–
ते	–	रे	बा	–	बा	–	की	–	–
प	प	म	ग	म	प	–	नि	–	नि
नि	त	उ	ठि	पै	यां	–	ला	–	गि
सां	नि	प	ध	प	ध	प	म	ग	म
तो	–	हि	–	म	ना	–	वे	–	–

संचारी

×		२			०		३		
प	प	प	–	प	ध	प	म	ग	गम
अ	ब	तो	–	क	ठि	–	न	–	भ–
प	–	नि	–	नि	सांनि	सां	निध	पम	प
ई	–	मे	–	री	आ–	–	ली–	––	–
प	–	प	ध	म	ग	–	स।	–	–
तो	–	बि	–	नु	ला	–	ल	–	–

प	-	निसा	ग	म	पम	प	गम	ग	रेसा
ओ	-	र-	न	हिं	भा-	-	वे-	-	--

आ-स-क र न प्र भु-मो-ह-न ना-ग-र मु र ली --में-रा--धे-रा-धे गा-वे-- --

''आभोग अन्तरानुसार''

राग बिहाग-ताल चचंरी (झपताल अंग)

नवल किसोर नवल नागरियां ।
अपनी भुजा श्यामउर ऊपर, श्यामभुजा अपने उर धरियां ॥१॥
करत विहार तरनीतनयातट, स्यामा स्याम उमगि रसभरियां ।
रही लपटाय प्रानप्यारेसों, मनि मरकत कंचन जेसे जरियां ॥२॥
या उपमाको रवि ससी नाहीं, कंदर्प कोटिक वारने करियां ।
'कृष्णदास'प्रभु गिरिधर नागर, नंदनंदन ब्रिखभानदुलरियां ॥३॥

स्थायी

×		२			०		३		
प	पम	ग	प	म	ग	गरे	सा	-	नि
न	व-	ल	-	कि	सा	--	र	-	न
सा	सा	ग	ग	म	प	गम	ग	रे	सा
व	ल	-	ना	-	ग	रि-	यां	-	-

अंतरा

×		२			०		३		
प	प	सां	-	-	रें	सां	सां	-	-
अ	प	नी	-	-	भु	-	जा	-	-

सां	–	गं	गं	मं	गं	रें	सां	नि	–
स्या	–	म	उ	र	ऊ	–	प	र	–
सां	नि	प	–	प	ध	प	म	ग	म
स्या	–	म	–	भु	जा	–	अ	प	–
प	–	सां	सां	नि	प	म॑प	ग	म	गम
ने	–	उ	र	–	ध	रि–	या	–	––

संचारी

×		२			०		३		
प	प	प	ग	म	प	–	प	–	–
क	र	त	–	वि	हा	–	र	–	–
ग	म	प	नि	नि	सां	नि	प	प	–
त	र	नि	त	न	या	–	त	ट	–
नि	ध	प	म॑	प	ग	म	ग	–	सा
स्या	–	मा	–	–	स्या	–	म	–	उ
नि़	सा	ग	ग	म	प	गभ	ग	रे	सा
म	गि	र	स	–	भ	रि–	यां	–	–

"आभोग अन्तरानुसार"

राग बिहाग–ताल चौताल

रावलके कहे गोप आज ब्रज दूनी ओप,
कान दे दे सुनो बाजे गोकुल मंदिलरा ।
जसोदाके पूत भयो ब्रिखभानजूसों कह्यो,
गोपी ग्वाल ले ले धाये दूध दही गगरा ॥१॥
आगें गोपवृंदवर पाछें त्रिय मनोहर,
चलि न सकत कोउ पावन न डगरा ।
'चत्रभुज प्रभु' गिरधारीको जनम सुनि,
फूल्यो मोंरा फिरे नारदसों अगरा ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
सां	–	सां	सां	–	सां	रें	नि	सां	नि	–	प
रा	–	व	ल	–	के	क	हे	–	गो	–	प
नि	ध	प	ग	–	म	प	ग	म	ग	–	सा
आ	–	ज	ब्र	–	ज	दू	नी	–	ओ	–	प
नि़	–	प़	नि़	–	नि़	सा	सा	ग	म	प	नि
का	–	न	दे	–	दे	सु	नो	–	बा	–	जे
सां	–	नि	प	ग	म	प	ग	म	ग	–	सा
गो	–	कु	ल	–	मं	दि	–	ल	रा	–	–

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
प	प	–	प	सां	सां	सां	–	सां	रें	सां	–
ज	सो	–	दा	–	के	पु	–	त्र	भ	यो	–
नि	नि	–	प	–	प	नि	ध	सां	नि	–	प
त्रि	ख	–	भा	–	न	जू	–	सों	क	–	ह्यो
सां	–	गं	गं	–	मं	पं	गं	मं	गं	–	सां
गो	–	पी	ग्वा	–	ल	ले	–	ले	धा	–	ये
नि	सां	नि	प	ग	म	प	ग	म	ग	–	सा
दू	–	ध	द	–	ही	ग	ग	–	रा	–	–

संचारी

×		०		२		०		३		४	
सा	–	सा	प	–	प	नि	ध	प	प	–	प
आ	–	गें	गो	–	प	वृं	–	द	व	–	र
प	–	प	–	ग	म	प	ग	म	ग	–	सा
पा	–	छें	–	त्रि	य	म	नो	–	ह	–	र
नि̣	–	प̣	नि̣	सा	सा	म	ग	प	नि	–	सां
च	–	लि	न	–	स	क	त	–	को	–	उ

नि	–	प	प	ग	म	प	ग	–	ग	–	सा
पा	–	ब	त	–	न	ड	ग	–	रा	–	–

च त्र–भु–ज प्र भु–गि–रि धा–री को–ज न म–सु–नि फू–ल्यो भों रा–
।फ रे–ना–र द सों–अ ग–रा– –

"आभोग अन्तरानुसार"

राग बिहाग—ताल. धमार

झूलेरी झूलेरी झूलें प्यारो लाल झूलै ।
सुरंग हिंडोरो रोप्यो, कालिंदीके कूलै ॥१॥
तेसीए सुहाई लागें द्रुम लता फूलें ।
'रसिकप्रीतम' देखे मिटी गई उर सूलें ॥२॥

स्थायी

×					२		०			३			
सां	–	–	सां	–	सां	–	नि	–	–	प	–	नि	ध
झू	–	–	ले	–	री	–	झू	–	–	ले	–	री	–
सां	–	–	नि	–	ध	प	प	म॑	प	ग	म	ग	–
झू	–	–	लें	–	प्या	–	रो	–	–	ला	–	ल	–
सा	–	–	ग	–	म	–	प	म॑	प	ग	–	म	–
झू	–	–	ले	–	री	–	झू	–	–	ले	–	री	–
ग	–	–	–	–	रे	–	सा	–	–	–	–	–	–
झू	–	–	–	–	–	–	लें	–	–	–	–	–	–

अंतरा

×					२		०			३			
प	प	–	सां	–	सां	–	सां	–	–	सां	–	–	–
सु	रं	–	ग	–	हिं	–	डो	–	–	री	–	–	–
सां	–	–	–	–	रें	सां	नि	ध	–	सां	–	नि	–
रो	–	–	–	–	–	–	प्यो	–	–	–	–	–	–
प	–	–	ग	–	ग	म	प	–	–	नि	–	नि	ध
का	–	–	लि	–	–	–	दी	–	–	के	–	–	–
सां	–	–	नि	ध	नि	धप	प	म॑	प	ग	म	ग	–
कू	–	–	लें	–	–	प्या-	री	–	–	ला	–	ल	–

सांचारी

×					२		०			३			
प	–	–	प	–	–	–	प	म॑	–	ग	–	म	–
ते	–	–	सी	–	–	–	ए	–	–	सु	–	–	–
प	–	–	नि	–	ध	–	प	म॑	प	म	–	ग	–
हा	–	–	ई	–	–	–	ला	–	–	गें	–	–	–
सा	–	–	ग	–	म	–	प	–	–	ग	–	म	–
द्रु	–	–	म	–	ल	–	ता	–	–	–	–	–	–

ग – – – –	रे –	सा – –	– – – –
फू – – – –	– –	लें – –	– – – –

रसि–क– – –प्री– –त–म–,दे- – – – – –खे– – – – –,ग– –इ– –
उ– –र– – –, सू – – ले प्या रो– – ला–ल–,

राग शुद्ध बसंत (पंचम वर्ज्य प्रकार) ताल आदिताल
(मध्यम ग्राम से गाया जाता है)

खेलत बसंत गिरिधरनचंद । आनंदकंद वर मनके फंद ।।ध्रु०।।
सोहत संग सुंदर वेनु बीन । त्रिखमानकुंवरी अतिसय प्रवीन ।
दोउ छबिके सिंधु तहां रहत लीन । ललितादि सखिनके नेनमीन ।।१।।

बनी मंजु कुंज जमुनाके कूल । भीने नवकेसरि दुकूल ।
रंगभरत हंसत दोउ सुखके मूल । तिने देखि मिटे सब तनको सूल ।।२।।
धिधिकट धिधिकट बजत मृदंग । डिडिडमक डमक डमक डफ मिले हे संग ।
ठठठनन ठनन करे तालरंग । गगगनन गनन बाजे उपंग ।।३।।

गावत अलाप तननननन । निंदित कोकिल समननननन ।
रंगभरत बलहि करि झिनिननननन । तब भरेरी नेन इननननननन ।।४।।

रंगभरत परस्पर करत हास । नहीं बरनि बात रसनाविलास ।
सब बंधी हें जुगल हित प्रेमपास । बलिहारि गयो जहां कृष्णदास ।।५।।

स्थायी

३	×	२	०	३	×	२	०
म ग	म ध	नि सां	– सां	नि ध	ध धनि	ध म	– म
खे –	ल त	ब सं	– त	गि रि	ध र–	न चं	– द

अंतरा

३		×		२		०		३		×		२		०	
नि	सां	रें	–	रें	गं	रें	सां	नि	ध	म	ध	नि	सां	–	सां
आ	–	नं	–	द	कं	–	द	व	र	म	न	के	फं	–	द

सो–ह त सां ग सुं–द र बे–नु बी–न ब्रि ख भा–न कुं व री अ ति स य
प्र वी–न

"प्रत्येक संचारी एवं आभोग, स्थायी अन्तरा अनुसार"

राग रामकली–ताल चर्चरी

माई सोहिलरा नंद महर–घर बाजे बाजे मंदिलरा अनुपम गति। सखी सहेली मिलि मंगल गावें रिखि मुनि बेद पठत ब्रह्मा सिव सुर मुनि फूले सुरपति ॥१॥ भयो आनंद तिहूं पुर घर मंगल, विप्र अभय कीने व्रजपति ॥ 'जगन्नाथ-' प्रभु प्रगट भये हें, कूख सिरानी रानी जसुमति ॥२॥

स्थायी

×		२			०		३		
रें	–	रें	सां	–	नि	ध	ध	प	–
सो	–	हि	ल	–	रा	–	आ	ज	–
म	रे	ग	म	प	म	ग	रे	सा	–
नं	–	द	–	म	ह	र	घ	र	–
सा	गम	प	–	प	ध	ध	ध	प	–
बा	जे-	बा	–	जे	मं	दि	ल	रा	–

प	ध̲	सां	–	सां	ध̲	प	प	ग	म
अ	नु	प	–	म	ग	ति	मा	–	ई
ध̲	–	ध̲	प	म	प	–	–	–	–
सो	–	हि	ल	–	रा	–	–	–	–

अंतरा

×		२			०		३		
गं	–	गं	–	गं	मं	–	मं	मं	गं
स	–	खी	–	स	हे	–	ली	मि	ल
रें̲	–	रें̲	सां	रें̲	गं	रें̲	सां	–	–
मं	–	ग	ल	–	गा	–	वैं	–	–
रें̲	रें̲	रें̲	सां	–	ध̲	ध̲	प	प	प
रि	खि	मु	नि	–	बे	द	प	ठ	त
ग	म	प	ध̲	सां	नि	ध	प	ग	म
ब्र	–	ह्मा	सि	व	सु	र	मु	नि	–
सां	–	सां	सां	सां	ध̲	प	म	ग	म
फू	–	लैं	सु	र	प	ति	मा	–	ई

संचारी

×		२			०		३		
सां	–	सां	सां	नि	ध	–	ध	प	म
भ	–	यो	आ	–	नं	–	द	ति	हूं
ध	ध	प	प	–	ध	म	प	प	–
पु	र	घ	र	–	मं	–	ग	ल	–
ग	रे	ग	म	प	म	ग	रे	–	सा
अ	भ	य	की	–	ने	–	वि	–	प्र
ग	म	प	नि	ध	प	म	प	–	–
ब्र	–	ज	–	प	ति	–	–	–	–

आभोग

×		२			०		३		
–	–	गं	गं	–	मं	–	मं	मं	गं
–	–	ज	ग	–	न्ना	–	थ	प्र	भु
रें	रें	रें	सां	रें	गं	रें	सां	–	–
प्र	ग	ट	–	भ	ये	–	हैं	–	–
रें	रें	रें	सां	–	ध	–	प	–	प
कू	ख	खि	रा	–	नी	–	रा	–	नी
ग	म	प	ध	सां	नि	ध	प	ग	म
ज	–	सु	–	म	ति	–	मा	–	ई

पूर्वप्रकाशित अष्टछापीय भक्तिसंगीत के भा—२ तथा इस ग्रन्थमें दिये हुए स्वरांकनसहितके पदोंमें से यहां ३८ रागोंकी १०० बंदिशोंके अनुसार गाये जाने वाले

२८० विभिन्न समान पदोंकी नामावली

राग भैरव

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ६ जे जे जे श्री बल्लभप्रभु अनुसार

(१) जागिये गोपाललाल प्रगट भयो (जगायवेको)

(२) नाचत व्रिखभानकुंबरी हंससुता (रास)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ १५ छगन मगन प्यारे लाल अनुसार

(१) आछो नीको लोनो मुख भोर ही (कलेऊ)

(२) जागिये गोपाललाल जननी (जगायवेको)

सं. सु. पृष्ठ ४२ जागिये ब्रजराजकुंवर कमलकोस अनुसार

(१) जागिये गोपाललाल ग्वाल द्वार ठाडे (जगायवेको)

(२) जागिये गोपाललाल देखों मुख तेरो (जगायवेको)

(३) मदभरे मतवारे नेंन खोलो क्यों न (जगायवेको)

सं. सु. पृष्ठ ४५ नागरी नंदलाल संग अनुसार

(१) प्रातकाल प्यारे लाल आवनी बनी (खंडिता)

(२) चमक आयो सो मुख कुंजतें जब (खंडिता)

(३) निर्तत गोपालसंग गोपिका मिली (रास)

(४) प्रातकाल झूलत हिंडोरे (हिंडोरा)

राग रामकली

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २६ नंदको लाल ब्रजपालने झूलें अनुसार

(१) प्रेखपर्यंकशयनं (पलना)

(४) राधिका श्यामतन देख मुसकानी (खंडिता)

(५) जयति श्रीराधिके सकलसुखसाधिके (मंगलादर्शन)
(२) लालयति दोलिकामंच (पलना)
(३) प्रेमपर्यंक गिरिधरन सोहे (पलना)
अ. भ. सं. भा. २, पृ. २४ पालने गोबिंद झूलो अनुभार
(१) झलो पालने नंदनंदन (पलना)
(२) झूलो पालने बलि जाऊं (पलना)
(३) बलि बलि चरित्र गोकुलराय (बाललीला)
(४) सिखबत चलन जसोदा मैया (बाललीला)
अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ १० लालको मुख देखन अनुसार
(१) तिहारो दरस मोहि भावे श्रीजमुनाजी (श्रीयमुनाजी)
(२) यह प्रसाद हों पाऊं श्रीयपुनाजी) (श्रीयमुनाजी)
(३) तिहारो दरस हों पाऊं श्रीयमुनाजी (श्री यमुनाजी)
(४) श्रीजमुनाजी तिहारो पुलिन मोहि भावें (श्रीयमुनाजी)
(५) तुम सम ओर न कोई श्रीजमुनाजी (श्रीयमुनाजी)
अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ पिय संग रंग भरि अनुसार
(१) जमुनासी नाँही कोइ दुःखहरनी (श्रीयमुनाजी)
(२) श्री जमुनाजी के ४० पद भी इस प्रकार गाये जाते हैं ।

राग खट

अ. भ. सं. भा. २ पृष्ठ, ४०:आज नंदलाल मुखचंद तथा आज उठि भोर अनुसार
(१) पाछली रात परछांही पातनकी (मंगला)
(२) नवल ब्रजराजके लाल ठाडो सखी ललित (मंगला)

राग परज

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ५० सुनोरी आज मंगल बधायो अनुसार
(१) सुनोही आज नवल बधायो (श्रीमहाप्रभुजीकी बधाई)
(२) सुनोरी.आज नवल बधायो (श्रीगुसांईजी की बधाई)

राग ललित

अ. भ. सं. भा. २, पृ. ५५ कमलसी अखियां लाल तिहारी अनुसार

(१) भोर भये मुख देख लजाने (खंडिता)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ५६ आज सगरी निसा कहां अनुसार

(१) आज निस जागे अनुरागे पागे कोनके (खंडिता)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ १६ क्यों मोहन दरपन नहि अनुसार

(१) एसे ही एसे रेन विहानी (खडिता)

(२) एसेई सांवरें रेन बिहानी (खंडिता)

राग–बिभास

अ. भ. सं. भा. ३, पृ. १२ प्रातसमें नवकुंजद्वार व्हे अनुसार

(१) प्रातसमें नवकुंजमहलमें श्रीराधा (मंगला)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३६ रतनजटित कनकथाल अनुसार

(१) बांकी श्रोह टेढी पाग (मंगला)

राग मालकोस

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ १९ माई रंग रंगे हो लाल अनुसार

(१) जरीको जरायवेको ततीतन तायवेको (खंडिता)

अ. भ. सं. भा. २ पृ. ६७ पीर न जानी अहो पिय अनुसार

(१) सब मिल आवो गावो बजावो

अ. भ. सं. भा. २, पृ. ६७ नख कहां लागे बन बानश।

(१) लहकन लागी बसन्तबहार (वसंतबहार)

(२) लहकन लागीरी बसन्तबहार (बसंतबहार)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ १४ मोरी भरी मटुकिया ले गयोरी अनुसार

(१) पिय बिन जागत रेन गई (खंडिता)

राग देवगंधार

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ७३ आजु बधाई मंगलचार अनुसार

(१) ब्रजमें — घर घर बजत बधा — ई (ज. बधाई)

(२) आज जगती पर जे — जे — का —२ (म. बधाई)

(३) भूतल महामहोत्सव आज (म. बधाई)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ २३ नेन भर देखो नंदकुमार अनुसार

(१) आज बन कोऊ वह जिन जाय (ज. बधाई)

(२) भू – त – ल — प्र – ग – ट—भ – ये— — — — —श्री व–ल्ल — भ — (म. बधाई)

(३) बे — द — ब—च – न— — —प्रतिपा– – – – -ल्यो– – चहुं — जुग (गु. बधाई)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ २२ मंगल रूप निधान सांबरो अनुसार

(१) आज गृह नंद महरिके बधाई (ज. बधाई)

(२) कृष्णा – न न द्धि ज रू – प प्रगटे — (म. बधाई)

(३) वल्लभरा – ज कु मा – र ज य श्री — (गु. बधाई)

(४) झूलत बढ्यो – आनं — द मो – ह न (डोल)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ७५ अद्‌भुत डोल बनी अनुसार

(१) डो — – ल – दो — ऊ — — अ – नु — रा – — गे — – — झू – – ल — त – (डोल)

राग अल्हैया बिलावल

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ १०७ आजुको सिंगार देख्यो अनुसार

(१) चलहु राधिके सुजान (रास)

(२) आज नागरी किसोर (रास)

(३) आजको सिंगार सुभग सांवरे (सिंगार)

सं. मु. पृष्ठ ५८ भोग सिंगार मैया सुनि अनुसार

(१) आज सिंगार निरख स्यामाको (सिंगार)

(२) ग्वालिनि दान हमारो दीजे (दान)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ११४ महामहोच्छव श्रीगोकुल गाम अनुसार

(१) सोभा आज भली बनि आई (शृंगार)

(२) आनंद आज नंदजूके द्वार (ज. बधाई)

(३) आज नंदजूके द्वार भीर (ज. बधाई)

सं. सु. पृष्ठ ५५ लटपटी पागके पेच संवारी अनुसार

(१) छांड देहु सुरपतिकी पूजा (गो. पूजा)

(२) राख लेहो गोकुलके नायक (इंद्र–मानभंग)

राग धनाश्री

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ १३० सब मिलि मंगल गावो अनुसार

(१) चिरं – जि यो – गो – पा – – ल रा नी तेरो, – चि रँ – जि यो – गो पा – – – – – – ल – (ज. बधाई)

(२) आ – पुन मं – ग लगा – बे हो रा – नी जू, – आ पु न मं – ग ल गा – – – – – वे – (ज. बधाई)

(३) जा – यो हो हे – सु त नी – को जसोदारानी, – जा यो हो हे – सु त नी – – – – – – को – (ज. बधाई)

(४) ब्रजवा – सि न को म गा – – – हो – ब्रज, ब्रजबा – सि न को म गा – – – – – – हो – (ढाढी)

(५) दुलहे – हो – न द ला – ल न्या – य दि न, – दुलहे – हो – नं द ला – – – – – – ल – (व्याह)

(६) धा–ई श्रीब – लभ द्वा – – र आ – ज व, धा – ई श्री व – लभ द्वा – – – – – र – (गु. बधाइ)

(७) आ–ये – ब लि पे – मां – ग न वा – मन, आ – ये – बलिपे – मां – – – ग – न – (वा. जयंती)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ २७ लालको मीठी खीर अनुसार

(१) वा – री – ते – रे – मुख पर ललना हो, वा – री – ते – रे – मुख – – पर – –

(२) रा – खो – अपनी – ओ – – ट मा – घो जू, रा – खो – अपनी – ओ – – – ट – – – (इंद्रमानभंग)

(३) मं – द का – न्ह एक ठो – रे–जें – व त, नं – द का–न्हएकठो – – – रे – – – (भोजन)

(४) नं – द गो पा – ल खि जा–वत जें – वत, नं – दगोपा – ल खि जा – – – व – त – (भोजन)

(५) नं – द का – न्ह बरु भै – या – जें – व त नं द का – न्ह बल भै – – – या – – – (भोजन)

(६) रो – टी – ओ – र ब री – – ला –ल को –, रो–टी – ओ – र ब री – – – – – – – – (भोजन)

(७) करिउ – ठे – दो उ भै – या–भो – जन, करिउ – ठे – दोउ भै – – – या – – –, (अचवन)

अ. भ. सं भा. ३, पृष्ठ ३० मनहर लें गये नंदकुमार अनुसार

(१) ए – सी टे – व परी – – सखियन (हिलग)

(२) मा – धो सों – मन मा – न्यो मेरोमाई (हिलग)

(३) लो – मी मे – रे–ने – न सखीरी– (हिलग)

राग आसावरी

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ १४४ गिरिधरलाल पालने झूले अनुसार

(१) बरसाने ब्रिखभान गोपके (राधाष्टमीकी बधाई)
(२) पोष कृष्ण नौमीको सुभदिन (गु. बधाई)
(३) चलरी सखी वृंदावन जैये (वसंत धमार)
(४) प्रीति बंधी श्रीवल्लभपदसों (म. बधाई)
(५) प्रिय नवनीत पालने झूले (पलना)
(६) नंदलालसो मेरो मन मान्यो (हिलग)
(७) बरसानेकी नवल नारि मिलि (वसंत धमार)
(८) देखो अदभुत अवगतिकी गति (ज. बधाई)
(९) बरसगांठि गिरिधरनलालकी (ज. बधाई)
(१०)मदनमोहनसों प्रीत करी में कहाजु भयो (हिलग)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ३३ मेरो माइ हरिनागरसों नेह अनुसार

(१) तुमको — लालक यों – हे — घै — या (घैया)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ३२ ग्वालिन कृष्णदरससों अटकि अनुसार

(१) माईमेरो स्या — म ल ग्यो – संग डो – ले — (हिलग)
(२) ग्वा – लिन तें — मे री गें — द चूरा – ई – (संक्रान्ति)
(३) मा–ई–मी – ठे – हरिजूके बो – लना (पलना)
(४) मैया मोहि ए – सी – दु ल ह नि भा – वे — (ब्याह)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ १४२ जाको मन लाग्यो गोपालसो अनुसार

(१) देखो अदभुत अवगतिकी गति (ज. बधाई)
(२) हों ढोटा तोहि क्यों छाँडो (दान)

राग तोडी

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ १५३ ए कहुँ ऊमड घूमड गरजत अनुसार

(१) तें कहूं देख्योरी आली नंदको नंदन (दान)

(२) कि – ये —, चटक मटक ठा — — डो — इ, रह – त — — पनघट
पर, पनि — हा – — रन — सौं— —, कर — त— —टो – —क—

अ. भ. सं, भा. २, पृष्ठ १५२ वहुत प्रसन्न भये पिय प्यारी अनुसार
(१) नवल निकुंजमहल रसपुंज ही (कुंज)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ३४ जेवत दोऊ रंग भरे अनुसार
(१) आ — ज हमा — रे भो — ज न की–जे (भोजन)
(२) परोसत गो — पी घूं – घट मा — रें (भोजन)
(३) अचवन की — जे कृपा — नि धा — न (अचवन)
(४) बी — री – नवलखा — लिन ला — ई (बीरी)
(५) जमुना – जल क्रीडत नंदनंदन (स्नानयात्रा)
(६) गो – विंद छिर कत छीं — ट अनू — प (स्नानयात्रा)

(७) क्री — डत का — लिंदी — ज ल मां — ही (स्नानयात्रा)

रागसारंग

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ १७३ श्रीलक्ष्मनगृह महामंगल भयो अनुसार
(१) जे वसुदेव किये पूरन तप (गु. बधाई)
(२) बडडेनको आगे दे गिरिधर (गोवर्धनपूजा)
(३) अक्षयतृतीया अक्षय लीला (अक्षयतृतीया)
(४) अक्षय तृतीया अक्षय सुखनिधि (अक्षय तृतीया)
(५) चैत्रमास संबत्सर परवा बरस प्रवेस कियो हे आज (संवत्सर)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ४० तरनितनया-तीर अनुसार
(१) फूल्यो – जन भा –ग्य पथ, पु –ष्टि प्र – ग ट करन दु – ष्ट पा –खं
– ड म त, खं – ड खं – ड न कि ये – (म. बधाई)
(२) पो–स नि – दों – स सु ख, पो – स सु – द र मा – स, कृ – ष्ण
नौ – मीं – सुभग, नवघरी – दि न आ – ज (गु. बधाई)

(३) ब – ठे हरि कुं – ज नव, रं–ग रा–धे – सं–ग, पहरि छू–टे – बं–ध, अं–ग बा–गो–ला–ल (कुंज)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ४२ दानघाटी छाक अनुसार

(१) फूलनको मुकुट बन्यो फूलनको पिछोरा (फूलमंडली)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ५३ घर घर ग्वाल देत हे हेरी अनुसार

(१) दे – – ख – ह – री – – को – म – ह – – ल – – – दे – – ख–री – (फूलमंडली)

(२) आ – – व – त–ही – – ज – मु –ना – – भ – र–पा – – नी – – – (पनघट)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ३७ लोचन ही को तारो ब्रजजन अनुसार

(१) सौ – र भ मा – ध वीं सरस सुहा – ई – (फूलमंडली)

(२) पू – जन चले री गोपा – ल गोवरधन, पू–जन चलेरी गोपा – – – ल – – – (गोवर्धनपूजा)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ १६९ वृदावन कुंजनिमें मध्य अनुसार

(१) सी – त ल –उ सी –र गृ–ह, छी–र क्यो–गु ला–ब नी–र, तहां – बे – ठे पि य – प्या – री, के – – लि – करत – हे – – (खसखानो)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ३६ आई ग्वालिन गोरी अनुसार

(१) बे – ठे – कुं – जभव– – न ला – लन (कुंज)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ, मोहन जेंवत छाक अनुसार

(१) आज नवकुंजनकी–अतिशोभा (कुंज)

गौड सारंग

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ १९९ हो नहि जान्यो री माई अनुसार

(१) हों नीके जानत री आली बहुनायक

नूर सारंग

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २०३ चलो सखी कुंज गोपाल अनुसार

(१) चलो – किन दे-ख न कुं – जकुटी– – – – – – – –(कुंज)

(२) घा – ट पर ठा – डे – मदन गोपा – – – – – – –(पनघट)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २०४ आजु दधि बेचन मोल अनुसार

(१) ला – लन बे – ठे – कुं – जस्थली –––––– (कुंज)

(२) ललन उठा – य दे हो – मेरी गगरी – – – – – – (पनघट)

(३) ठा – डो ई दे – खो – जमुना – घा – – ट – – – – – (पनघट)

मधमाध सारंग

अ. भ. सां. भा. २, पृष्ठ १८४ सूर आयो सिर पर अनुसार

(१) ज्ये – ष्ठ मा–स तपत धा–म, कहा–को–सिधा–रोला–ल, ए–सी को–न चतुर ना –रबा – को बी–रा ली–– नो– –(दुपहरी)

सामत सारंग

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ १८८ अनत न जैये अहो पिय अनुसार

(१) बिराज – त दो – – – ऊ – उ सी – र – महल, छूटत – – – फु – हा– रे – आ–गें–नी– – – के – – बि रा ज–त (खसखाना)

राग गौरी

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ६४ नातर लीला होती जूनी अनुसार

(१) हौं–चरना–तप–त्रकी–छै–याँ (गु. बधाई)

(२) वं–दे–श्री–वि–ट्ठलचरणं– – –(गु. बधाई)

(३) वं–दे–हं–तं–विमलहुता–शं– (म. बधाई)

अ. भ. सां. भा. २, पृष्ठ २५८ बनतें आवत गावत अनुसार

(१) गो–रजरा–जत सो–वलअं–ग– (आवनी)

(२) आ–वत हे–आ–गे–दें–गै – या –(आवनी)
(३) की–डतका–न्हकनिकआं–गन– – –(बाललीला)
(४) दूलहे–दुलहनि अधिक बनी – – – (ब्याह)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २६० वे देखो आवत हे गिरधारी अनुसार

(१) झूक रही सुनि–मुरलीकी टे–र (आवनी)
(२) मै–या–या–तें भई–अबे–र (आवनी)
(३) गिरितन सो–भित हे–गिरिधा–री (इन्द्रमानभंग)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २५९ लटकत चलत जुवति अनुसार

(१) देख न दे–तनबै–रिन पलकें– (आवनी)
(२) मो–हन दे–खसिरा–ने–नयना (आवनी)
(३) आ–वत मो–हन मनबुहयों –हो– (आवनी)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २६३ मेरे मन आनंद भयो अनुबार

(१) मेरे मन आनंद भयो (रा. बधाई)

राग मारु

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २७३ कृष्णजनम सुनि अपने अनुसार

(१) आ– –ज–क–हूं– –तें– – –, या– –गो– – – कुल – मैं–
– –, अ– –दभु–त–बर–खा – – –, आ– – ई– – –हो– –
– – – – –, (ज. बधाई)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २७२ आज रघुवीरको वीर आयो अनुसार

(१) सुखद रवि को–टिसम, भवनभ्रा–जे– – – –, (ज. बधाई)
(२) लं–क प्रतिरा–मअं–, गद पठा – वे– – – –, (करखा)
(३) देखे हो–क थरघु, ना–थ आ–यो– – – –, (करखा)
(५) इ–न्द्र – को पतें ब्रज–,जन छुडा–ई– – – – (इन्द्रमानभंग)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २७० हिंडोरे झूलत बंसीवाला अनुसार

(१) हो – त कुला–हल, भा–री–ब्रजमें–, हो– त:कुला – हल भा – – –
री – – –, (ज. बढाई)

(२) सी–ता–को–नेह, री– – होलछमन, सी–ता को–नेहरी– – – हो
– – –, (करखा)

(३) रा–मरजा–हों–,पा–उ–जो-पें-रा-मरजा–हो–पा– – –उ– – –, (करखा)

(४) को–नदे–सतें–,आ -यो–बनचर, को–नदे–सतें–आ– – – यो–
– –, (करखा)

(६) झू–लत सुरंग हिं, डो–रे–प्यारो प्यारी,झू–लत सुरंगहिं, डो– – –रे
– – –, (हिंडोरा)

राग मालव

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २८५ रासविलास गहे करपल्लव अनुसार

(१) अला–गला–गनि उरप तिरप गति, नचवत व्रजललना–रा–से– – –, (रास)

(२) मदनगोपा–लरा -समं–डलमें–, मा–लव रा–ग–रसभयोंगा–वे–,

(३) चं-दगोविं-द गोपी–ता–रा–गन,–बन्यो–रा–स–में–बनवा–री– – –,

राग यमन

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ६७ जियकीन जानत हो पिय अनुसार

(१) मेरेरी बगर–में–आ–वत–,छबिसों–कम–ल–फि–रा–वत, (सेन)

(२) अब दूधला–ईजसोदा–मै–या, की–जे–पा– –नलला–रे–,

राग कल्यान

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३१३ डोल झूलत हें गिरिधरन अनुसार

(१) डो– –ल झू–ल–त–हे– –डो– –लझू– –ल–त–हे– – गि–रि–धर
–न– –नवल–नं–द–ला– –ला– – –डो – – – – –ल– (डोल)

राग केदार

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३२३ राधिका आज आनंदमें डोले अनुसार

(१) रु–परसपुं–जवर, नों–कहा–चा–तुरी– (मान)

(२) आ—सरो—ए—कश्री—,व—ल्ल भा—धी—सको   (आश्रय)
(३) मधुरव्रजदे—सबसि, मधुरकी—नो– – – –

राग काफी

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३४० ऐरी सखी झूलत नवल किसोर अनुसार

(१) एरी सखी प्रगटे—कृ—ष्ण मुरा– – —रि– – – (ज. बधाई)
(२) एरी सखी झू—लत नवलकिसो– – – र– – – (हिंडोरा)
(३) एरी सखी सरद चाँ—दनी रा– – —त– – – (हिंडोरा)
(४) एरी सखी नीकसे—मो—हन ला– – —ल– – – (बसंत धमार)
(५) एरी सखी निकसी वृष भा—न कुमा– – —री– – – (बसंत धमार)

राग जयजयवन्ती

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३४६ झूलत नवललाल झुलावत अनुसार

(१) वृंदावन बंसीबट कुंजकुंज जमुनातट   (रास)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३४८ माई आज तो गोकुल गाम अनुसार

(१) माई आज तो बधाई बाजे नंद   (ज. बधाई)
(२) माई आज तो बधाई बाजे मंदिर महरके   (ज. बधाई)
(३) माई आज तो मोहन संग रंगभरी (धमार)

राग कान्हरो

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ७१ सुरमी कान जगाय खरिकहिं अनुसार

(१) श्री– —ल– – —क्ष्मन—गृ—ह—, प्रग—ट—भ—ये– —हे– – —श्री
– – व– – —ल्लभ—प—र—, मा– —नं—द– —रू– —प– – –,
(म. बधाई)

(२) पर-म—कृ—पा– —ल—श्री—, व – —ल्ल—भ—नं– —द—न—,कर– त
—कृ—पा – —नि—ज—हा– —थ—ले—मा– —थे– – –, (गु. बधाई)

(३) प्रग–ट–भ–ई– – सो – – –,भा– –त्रि–भु–वन–की– – –,श्री
– –ब्रि–ख–भा– –न–गो–,–प–कें – – – आ – –ई– – –
(रा. बधाई)

(४) श्री वि–ठ्ठ–ल–ना– –थ–ब–,सत–जि–य–जा – –के– – –, ता– –
की– – –री– –त–प्री–,–त–छ–बि–न्या– –री– – –(गु. बधाई)

(५) श्री– –न–र–सिं– –ह–भ– –क्त–भ–य–भं– –ज–न–, रं– –ज
–न–मन–स–ब–, सुख–का– – –री– – – – – –,(नरसिंह जयन्ती)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३५४ कापर ढोटा नेन नचावत अनुसार

(१) रा–ग–का–न्हरो–तुम, ही –पें–सुनि–यत–,श्री–भ्रखभा–न–नं–,दि
–नी–रा–धे– – –,

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ हरिं जनमत ही आनंद अनुसार

(१) यह–व्र–त–मा– –धो– – –, प्रथ–म–लि–यो– – – – – – –,
(नृसिंह जयन्ती)

(२) हरि–रा– – –खे– –ता– – –, हि– –ड–र–का–को– – –,
(नृसिंह जयन्ती)

राग नायकी

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३७१ लोचन लालची भये अनुसार

(१) प्रीतको – म र म जा–न्यो (सेन द.)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३७२ ठाडे कुंजभवन अनुसार

(१) प्या – रे पै – या परन नदी – नी (सेन द.)

(२) प्या – रे – अव – धि – – ट री – – (सेन द.)

(३) तू – मोहिला – ई री – कि त ग ली – (मान)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ७५ वारो मीन खंजन मालीके अनुसार

(१) यह म न ला – – ग्यो – – री – – मे – रो सुं – – द – र
स्या – – म – अ ही – – र – – सो – – म – न (सेन द.)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ३६९ मेरो पिय रसियारी अनुसार

(१) रुसनों – न कर प्या – री, रुसनो – नि वा – – रि –, रुसनो –
न क र प्या – री
(मान)

राग अडाना

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३७९ तेरी भौंहकी मरोरनतें अनुसार

(१) जा – – ओ – री ला – ज मे – रें, ए – सी को – न का – ज
आ – वें, कम – ल – न यन – नी – कें, दे ख – न – नदी –
ने ज – ल
(सेन द.)

(२) या – – म–ग नि क–सी – –, आ – – य – अ चा – – न–
क, का – – न्ह – कुं व र – ठा – डे, अप – नी – – पो – र
हों – तो,
(सेन द.)

(३) की – – लो – – पट – ल – प, टा – – नो – – क टि – बं–
सी, ब ट – ज – मु ना – – त ट –, ठा – डो नागर नट – च–
ट
(रास)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३८० बेनी निरखत भुजंग अनुसार

(१) बं – सी – ब ट के – – नि क ट, ह रि – रा – स रच्यो – हे –
–, मो – – र मु कु ट – अ–रु, ओ – – ढे – – पी–त–प–ट,
(रास)

(२) रा – जें गि रि रा – ज आ – ज, गा – य गो–प जा – के त – र,
बा – नि क – वि चि – त्र ब नी –, ध रें – मे – ख न ट – व – र
(इन्द्रमानभंग)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३७६ जलको गई सुघट अनुसार

(१) सु र रा – ज आ – ज पा – – य न – प र्यो –, गि रि – ध र न आ
– – पु – नो, क – – यों – – सु र – रा – ज, (इन्द्रमानभंग)

(२) श्री व – ल्ल भ ला – – डि – ले हो–तु मा – रे, च र – न – – –
कम – ल – के, स र – न – – श्रीव – ल्ल – भ, (गु. बधाई)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३८३ सब गोकुलको जीवन अनुसार

(१) ए – सब ब्रज – के – – आनं – द कं – द गो – – कु ल पति
ना – – य क स व (इन्द्रमानभंग)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ७७ राधेजू झूलत रमकि अनुसार

(१) पिय तोहि ने – – न– –नही– –में– – –रा–खूं (सेन)

(२) हिंडोरोरी व्र- –ज-के-आं- –ग- –न मां–च्यो (हिंडोरा)

राग रायसा

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३८८ झूलत राधामोहन अनुसार

(१) गोकुल गाम सुहावनो (ज. बधाई)

(२) द्विजकुल प्रगटे श्रीहरि (व. बधाई)

(३) फूलन रच्यो हे हिंडोरो (हिंडोरा)

(४) झूलत मोहन रंगभरे गोपवधू (हिंडोरा)

(९) सकल कुँवर गोकुलके (धमार)

(३) मिलजु डंडारस खेलही (धमार)

राग बिहाग

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३९५ बेठे ब्रजराजकुंवर प्यारी अनुसार

(१) मा – न कि यो – मा – नि नी – म, ना – यो हू – न मा – ने ने –
क, मा – न हू – में सो – य र ही –, मा – नि नी – न मा –
न कें – – (मान)

(२) दो – रीदो – री – आ – – व – त, मो – – हे – म ना – – व–
त, दा – – म – ख र च – कछु –, मो – – ल – लई – – री
– – (मान)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३९७ पोढे माई मदनमोहन अनुसार

(१) चरन मो – ह न ला – ल चाँ – पत, चरन मो – हन ला
– – – – – ल – (पोंढवे)

(२) प्रे – म के – प र यं – क पो – ढे –, प्रे –म के –पर
यं – – – – – क – (पोढवे)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ७८ सखियन रुचि रुचि सेज अनुसार

(१) रुचि रुचि से – ज ब, ना – ई – स खि य न, रुचि रुचि
से – ज ब, ना – – – ई – – –, (पोढवे)

(२) वि – ट्ठ ल ना–थ ध, नी – – ह मा–रे श्री, बि – ट्ठ ल ना – थ
ध, नी – – – – – – – –, (पोढवे)

राग बिहागरो

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ४०५ प्रभट व्हे मारगरीति दिखाई अनुसार

(१) झू – –ल – त – हें – – बां – ह –, जो – – रें –
– – ये – – दो – ऊ –, झू – – ल – त–हें – – वा
– ह–, जो – – – – – – – रे – – – – – –,(हिंडोरा)

(२) न च– व – न – सिख – व – त –, प्या – – री –
– – पि य – को – – –, न च – व – न – सिख –
व–त–, प्या – – – – – – – री – – – – – – –, (रास)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ४०७ भरोसो दृढ इन चरनन अनुसार

(१) व – – ल्ल – भ – ही – – को – – –, भा – – री – भ –
रो – – सो – – –, व – – ल्ल – भ – ही – – को – – –,
भा – – – – – – – – री – – – – – – – (आश्रय)

(२) व – – – ल्ल – भ – ही – – को – – भ, रो – – सो – – –
मो – – हि – श्री –, ब – – ल्ल – भ – ही – –
को – – भ, रो – – – – – – – – सो – – – – – – –, (आश्राय)

(३) गो – – व – र – धन – की – – –, रहि – ये – – त
रे – – टी – श्री –, गो – – व – र – ध न – की – – –,
रहि – – – – – – – ये – – – – – – – –,

राग सोरठ–मल्हार

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २२९ सखीरी (बूंद) अचानक लागी अनुसार

(१) झूमि झूमि बरखनला–गे–बा–दर (जगायवेको)
(२) करत कलेउ–भो–र लाल माई (कलेउ)
(३) गोवर्धन पर मुरवा बोले माई (मंगल)
(४) सुबह स्या–मको दे–तबी–री– (बीरी)
(५) पीवतदू–धसिरा–य गिरिधर (दूध)
६) रु–सिवे–की–नां–ही यह रितु (मान)
(७) पोढे–ए–कही सां–ग दोउ मिल (पोढवे)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २३१ क्यों न भये हम मोर अनुसार

(१) ये बडभा–गी–मो–र देखो–माई, –ये बडभा–गी–मो– – – – –
र – (शृं. समय)
(२) जें – वत अति सुख दी – नो आ – ज ह रि (राजभोग सरे)
(३) नी – की – आ ज घटा – – पर – ब्रज पर (रा. दर्शन)

(४) गो – व र ध न तें – आ – ई गा – य स ब (संध्यारती)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ झूलत सुरंग हिंडोरे अनुसार

(१) झूलन के – दिन आये – हिंडो – – रे माई – – (हिंडोरा)

(२) उभ ग र हीं – ब्रज नारी – आज – – बन – – (हिंडोरा)

(३) गिरि धर सुरंग हिंडोरे – झूले – – माई – – (हिंडोरा)

(४) जुग ल कि सो – र हिंडोरे – झूले – – माई – – (हिंडोरा)

(५) राजत रं – गरं – गीलो – हिंडो – – रे – – – (हिंडोरा)

(६) नट वर सुरंग हिंडोरे – झूले – – माई – – (हिंडोरा)

(७) झूलत नटवरलाल – आज – – बन – – (हिंडोरा)

(८) झूलत हे – ब्रजनाथ हिंडोरे – – माइ – – (हिंडोरा)

(९) झूलत ला – डिली लाल – हिंडो – – रे – – – (हिंडोरा)

(१०) झूलत ला – ल बिहारी हिंडोरे – – माई – – (हिंडोरा)

(११) सावन ती – ज सुहाई – आज – – सुद – – (हिंडोरा)

(१२) रस भरि सुरंग हिंडोरे – झूले – – माई – – (हिंडोरा)

(१३) कुसु मनि भां – तिबनाइ हिंडोरे – – माई – – (हिंडोरा)

(१४) कुंज हिंडो – रो – साज्यो – आज – – बन – – (हिंडोरा)

(१५) जुग ल कि सो – र हिंडोरे – झूले – – माई – – (हिंडोरा)

राग गौड–मल्हार

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ५७ घूमि घूमि घटा आई अनुसार

(१) ला – ल ओ – र ल ल – ना – जू, बाँ – ह जो – टी उठे –
प्रा – त, पव – न – – लग – त – –, कम – ल – –
लप – टा – त – (मंगला)

(२) व्या – – रु – क र त – क – र, कौ – – – र – ध
र त – मु ख –, सु ख – उ – प ज त – क – छु,
स्वा – – द – अ धि क – इ – त (व्यारु)

(३) कुं – – ज – म ह ल – के – –, आं – ग न म धि
पिय – प्या – री, बाँ – ह जो – टी फि र त र स –,
रं – ग सो – – र ग – म गे – (शयन)

(४) प हि – रें – क सूं – भी सा – री, बे – ठे – पि य सं – ग
प्या – री, सु रं – ग – हिं डो रे – शो भा –, ला – गे –
अ ति भा – – री – – (हिंडोरा)

(५) स्या – – मा – जु दु ल – ह नि –, दु ल – हे – र सि –
क व – र, र म – कि – र म – कि दो – उ झू – – ल –
त र स – भ र – (हिंडोरा)

(६) न व – ल – हिं डो – रो ला – ल, न व – ल – झू ल त –
ला – ल, न व – ल – – व्रज – ब धू –, न व – ल – झु
ला – वे मा – ई (हिंडोरा)

(७) अ ब ही – हो – आ – ई ला – ल, रा – धे को – म ना – य
ला – ल, झू लो – झू – ल वो – – दो – ऊ, री – झ
री – झ वो – – गा – वो (हिंडोरा)

अ. भ. सं भा. २, पृष्ठ २२४ माई री घन मृदंग अनुसार

(१) अ ध र — रं ग रा — च्यो —, अ रु न — अ ति प्रे — म —,
प्री — — त के — पा — न ह, र त म न बी — रा — — — (बीरा)

राग—नट—मल्हार

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २३६ वा पत पीतकी फहरान अनुसार

(१) ग्वा — लि नि प्रे — म प्री — त रं ग भी — नी — (छाक)

राग धूलिया—मल्हार

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २३५ जहां तहां बोलत मोर अनुसार

(१) ना — ग — र — नं — — — द — — कि, सो — र — —
अ:रो — — ग त — — — (छाक)

(२) ट प क — न — ला — — — गी — — बूं, — — दें — — चहूं — —
दि स — — — (छाक)

(३) स्या — म — क — र — त — हे — — बि, हा — र — —
मधु — — वन — — — (राजभोगदर्शन)

(४) ज — ग — न्ना — — — थ — ह — रि —, दे — वा — — —
ज — य — श्रीं — — — (रथयात्रा)

(५) र — थ — बे — ठे — — — गि — रि —, धा — री — तु म
दे — खो — स — खी — (रथयात्रा)

राग सूर—मल्हार

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २३२ सरस हिंडोरना माई अनुसार

(१) फू — ल हिं डो — — रा — मा ई झू ले — श्री — ब्र ज चं — द
(हिंडोरा)

बसंत (शुद्ध)

अ. भ. सं. भा. २ पृष्ठ ४१८ गिरिधरलाल की बानिक उपर अनुसार

(१) चली — हें — भ — रन — गि — रि —, धर — न — ला — —
ल — कों — — —, बनि — ब — नि — अन — ग — न —, गो —
— — — — — — पी — — — — — — — — (बसंत)

(२) कुच — ग — डु — वा — — जो — — —, बन — मो — र — कं
— — चु — की —, बस — न — ढां — — पि — लै — — —, रा
— — ख्यो — ब — सं — — — त — — — (बसंत)

(३) नव — ल — ब — सँ — — त — न —, वल — वृं — — — दा —
— ब — न —, नव — ल — स्या — — म — खे — ले —, हो — —
— — — — — री — — — — — — — (बसंत)

(४) गिरि — ध — र — ला — — ल — र —, स — — — भ — रे — खे
— — ल — त —, बिम — ल — ब — सं — — — त — रा —, —
धि — का — — — सं — — — ग — — — (बसंत)

(५) रत — न — ज — टित — पि — च —, का — — इ — नि — कर
— लि — यें —, भर — त — ला — — — ल — कों — — —, भा
— — — — — — — वै — — — — — — — — (बसंत)

(६) गो — — व — र — धन — की — — —, सिख — र — चा — —
रु — प — र —, फू — — ली — — — नव — ल — मा —, — ल
— ती — — — जा — — इ — श्रीं — (बसंत)

(७) गुरु — ज — न — में — — ठा — — —, डे — — दो — ऊ —
प्री — — त — म —, से — — — न — नि — खे — — — ल — त —,
हो — — — — — — — — री — — — — — — — — (बसंत)

अ. भ. सं. भा. २ पृष्ठ ४२० खेलत बसंत गिरिधरनलाल अनुसार

(१) खेलत बसंत गिरिधरनलाल ॥ जू — व — ती — — — जू — रि —

आ – – इ – – – न व – ल – बा – – ल – (बसंत)
(२) गो – – – पी – – ज – न – व – – ल्ल – भ – जै – – मु
– कुं – – – – द (बसंत)

हिंडोल – बसंत

अ. भ. सं. भा. २ पृष्ठ ४२३ हरिरिह ब्रजयुवती शतसंगे अनुसार

(१) गा – – व – त – चली – – – ब –, सं – – त – ब –
धा – – व – न –, नं – – द – रा – – य – द – र –,
बा – – – – – – – र – – – – – – – – (बसंत)
(२) मो – – ह – न – बद – न – वि –, लो – – क – त –
अखि – य – न –, उप – ज – त – है – – अ – नु –,
रा – – – – – – – ग – – – – – – – – (बसंत)
(३) अति – सुं – – – – दर – म – नि –, बटि – त – पा – – ल
– नो – – –, झू – – ल – त – ला – – ल – बि – हा
– – – – – – – री – – – – – – – – (बसंत)
(४) रिं – – ग – न – कर – त – का –, – न्ह – आं – – – – गन
– में – – –, कर – लि – – – ये – – न – व –, नी –
– – – – – – त – – – – – – – – (बसंत)
(५) अरु – न – अ – बीर – जि – न –, डा – – रो – – – – ला
– – ल – न –, दु – – ख – त – अखि – या – ह –, मा
– – – – – – – री – – – – – – – (बसंत)
(६) आ – – व – नि – की – – ब – लि –, हा – – री – – –
हरि – जू – के –, आ – – व – नि – की – – ब – लि –,
हा – – – – – – – री – – – – – – – (बसंत)

वसंत (पंचम अंग)

अ. भ. सं. भा. २ पृष्ठ ४२५ ऋतु बसंत तरु लसंत अनुसार

(१) आ – ज ल ल ना – ला – ल, फा – ग खे – ल त ब ने –, मिल